Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

अंक 8

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

28 अप्रैल 2016 ई

20 रजब 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार हज़ार बरकत और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है। उसके उच्च स्तर का छोर पता नहीं चल सकता और इसकी कुदसी तासीरों का मूल्यांकन करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उस के स्तर की पहचाना नहीं गया। वह तौहीद जो दुनिया से गुम हो चुकी थी वही एक पहलवान है जो फिर इस दुनिया में लाया।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला व्यक्तिगत रूप से बेनियाज़ है जैसा कि वह फरमाता है

فَاِنَّ اللّٰہَ غَنِیٌّ عَنِ الۡعٰلَمِیۡنَ (आले इमरान: 97)

और

وَ الَّذِیۡنَ جَاہَدُوۡا فِیۡنَا لَنَہۡدِیَنَّہُمۡ سُبُلَنَا (अन्कबूत: 70)

अर्थात ख़ुदा तो दुनिया से बेनियाज़ है और जो लोग हमारे रास्ते में मुजाहिद: (चेष्टा) करते हैं और हमारी तलाश में कोशिश को अंतिम छोर तक पहुंचा देते हैं उन के लिए हमारा यह कानून कुदरत है कि हम उन्हें अपनी राह दिखला दिया करते हैं। अत: ख़ुदा की राह में सबसे पहले कुरबानी देने वाले नबी हैं। प्रत्येक अपने लिए कोशश करता मगर अंबिया अलैहिमुस्सलाम दूसरों के लिए करते हैं। लोग सोते हैं और वे उनके लिए जागते हैं। और लोग हँसते हैं और वे उनके लिए रोते हैं और दुनिया की रिहाई के लिए हर एक मुसीबत सहर्ष अपने पर उठा लेते हैं। यह सब इसलिए करते हैं कि ताकि ख़ुदा तआला कुछ ऐसी तजल्ली फरमाए कि लोगों पर साबित हो जाए कि ख़ुदा है और कोशिश करने वाले दिलों पर उसकी हस्ती और उसकी तैहीद प्रकट हो जाए ताकि वे उद्धार पाएं। इसलिए वह जानी दुशमनों की सहानुभूति में लगे रहते हैं। और जब अंतिम सीमा तक पर उनका दर्द पहुंचता है और उनकी दर्दनाक आहों से (जो जीव की रिहाई के लिए होती हैं) आसमान भर जाता है, तब ख़ुदा तआला अपने चेहरे की चमक दिखलाता है और ज़बरदस्त निशानों के साथ अपनी हस्ती और अपनी तौहीद लोगों पर प्रकट करता है। इसलिए इसमें शक नहीं कि तौहीद और ख़ुदा को जानने की पूंजी रसूल के दामन से ही दुनिया को मिलती है बिना इसके हरगिज़ नहीं मिल सकती और इस बात में सर्वोच्च नमूना हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिखाया कि एक क़ौम जो गन्दगी पर बैठी हुई थी उन्हें गन्दगी से उठाकर गुलज़ार (बाग़) में पहुंचा दिया। और जो रूहानी भूख और प्यास से मरने लगे थे उनके आगे रूहानी उन्नत स्तर के खाद्य पदार्थ और मीठे शर्बत रख दिए। उन को बर्बर हालत से इंसान बनाया। फिर साधारण मनुष्य से सभ्य इंसान बनाया फिर सभ्य इंसान से पूर्ण इंसान बनाया और इतने उनके लिए निशान दिखाए कि उन्हें ख़ुदा दिखला दिया और उनमें ऐसा परिवर्तन पैदा कर दिया कि वह फरिशतों से हाथ जा मिले। यह प्रभाव किसी और नबी से अपनी उम्मत के बारे में प्रकट में न आया क्योंकि उनकी संगत वाले अपूर्ण रहे अत: मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार हज़ार बरकत और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है। उसके उच्च स्तर का छोर पता नहीं चल सकता और इसकी कुदसी तासीरों का मूल्यांकन करना मनुष्य का काम नहीं। * अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उस के स्तर की पहचाना नहीं गया। वह तौहीद जो दुनिया से गुम हो चुकी थी वही एक पहलवान है जो फिर इस दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से बेहद स्थिति में मुहब्बत की और अत्यधिक स्तर पर मानव जाति की सहानुभूति में उस की जान नर्म हुई इसलिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के रहस्यों का परिचित था उसे सभी नबियों और सभी अव्वलीन और आख़रीन पर उत्कृष्टता प्रदान की और उसकी मुरादें उसके जीवन में उसे दें। वही है जो प्रत्येक फ़ैज़ का स्रोत है और वह व्यक्ति जो बिना उस की फ़ज़ीलत स्वीकार किए किसी नेकी का दावा करता है, वह मनुष्य नहीं है बल्कि शैतान की नस्ल में से है क्योंकि हर एक गुण की चाबी उसे दी गई है और हर एक अनुभूति का खज़ाना उसे प्रदान किया गया है। जो उसके द्वारा नहीं पाता वह सनातन वंचित है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है। हम नेअमत का इंकार करने वाले होंगे अगर इस बात को स्वीकार न करें कि वास्तविक तौहीद हम ने इसी नबी के माध्यम से पाई और ज़िन्दा ख़ुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के माध्यम से और उसके प्रकाश से मिली है और ख़ुदा की बातचीत और सम्बोधन का सौभाग्य भी जिस से हम उसका चेहरा देखते हैं उसी नबी के द्वारा हमें उपलब्ध हुआ है। हिदायत के सूर्य की किरण धूप की तरह हम पर पड़ती है और इसी समय तक हम प्रकाशित रह सकते हैं जब तक कि हम उस के सामने खड़े हैं।

* यह अजीब बात है कि दुनिया खत्म होने को है मगर उस पूर्ण नबी के फैज़ान की किरणें अब तक ख़त्म नहीं हुईं। अगर ख़ुदा का कलाम कुरआन शरीफ रुकावट न होता तो केवल यही नबी था जिसकी तुलना में हम कह सकते थे कि वह अब तक शरीर सहित जीवित आसमान पर मौजूद है क्योंकि हम उस के जीवन के स्पष्ट चिन्ह पाते हैं। उसका धर्म जीवित है। इस का पालन करने वाला जीवित हो जाता है और इसके माध्यम से ज़िन्दा ख़ुदा मिलता है। हमने देख लिया है कि ख़ुदा और उस से और उस के धर्म से और उस के प्रेमी से प्यार करता है। और याद रहे कि दरअसल वह ज़िन्दा है और आसमान पर सब से इसका स्थान बेहतर है, लेकिन यह पार्थिव शरीर जो नश्वर है यह नहीं है बल्कि एक और नूरानी शरीर के साथ जो अनन्त है अपने सर्वशक्तिमान ख़ुदा के पास आसमान पर है। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 117 -119)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

मरियम शादी फण्ड

अहमदी बच्चियों की सम्मान जनक विदाई का प्रबंधन

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की तहरीक

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने अपने अंतिम दिनों में ग़रीब अहमदी बच्चियों की शादी में बिना दहेज के जाने के बाद आने वाली समस्याओं और उनके ससुराल के तानों पर बहुत दु:ख किया और अहमदी बच्चियों की शादी के मौके पर सहायता की व्यवस्था कहते हुए इस मुबारक तहरीक की घोषणा की। इस दु:ख को हुज़ूर ने इन शब्दों में उल्लेख किया :.

"मैं यह घोषणा करना चाहता हूँ कि जो भी बेटियां ब्याहने वाले हैं और गरीबी की वजह से उन्हें कुछ दे नहीं सकते, कुछ थोड़े बहुत कपड़े, कुछ सिंगार की चीज़ें यह तो अनिवार्य हैं वरना वह अपने ससुराल में जाकर शर्मिंदा होती हैं। मुझे कई बच्चियों ने बेचारियों ने यह ख़त लिख कर अपने दर्द को व्यक्त किया है कि हमारे पास कुछ ज्यादा चीज़ें नहीं थीं। साधारण कपड़े थे नतीजा यह निकला कि ससुराल पहुंचे तो ताने मिलने शुरू हो गए और कई ताने मलते हैं। यह तो अत्याचार करते हैं जो ताने देते हैं क्योंकि आँ हज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत तो यह थी कि दो कपड़ों में अपनी बेटी को विदा किया है और कोई दहेज आदि नहीं था। मगर अब रिवाज पड़ गया है। इस लिए देखा देखी कुछ ज़रूर करना पड़ता है। इसके लिए मैं यह घोषणा करता हूं कि जिनकी बेटियां ब्याहने वाली हैं और उन्हें मदद की ज़रूरत है। यथा ताकत मैं अपनी तरफ से भी कुछ उन्हें प्रदान करता हूं। वह स्पष्ट रूप से मुझे लिखें कि उनका उचित गुज़ारा हो जाएगा और दहेज की रस्म कुछ हद तक पूरी हो जाएगी अगर मेरे अंदर इतनी ताकत न हो तो अल्लाह के फज़ल से ख़ुदा तआला की जमाअत ग़रीब नहीं है। बहुत रुपया है जमाअत के पास तो इंशा अल्लाह जमाअत के एक फण्ड से उनकी सहायता कर दी जाए मगर उन को तौफीक मिल जाएगी कि उनकी बेटियों अच्छाई और भलाई के साथ अपने घरों को रवाना हों। अल्लाह तआला मुझे इसकी ताकत प्रदान करे और जिस हद तक मुझ में ताकत है इंशा अल्लाह ज़रूर उनकी मदद करूंगा और अल्लाह तआला उन्हें आसानी से विदा करे।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 21 फरवरी 2003 फज़ल इंटरनेशनल 28 मार्च 2003)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने इसी प्रकार फरमाया:

" अब मैं अंत में यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि पिछले ख़ुत्बा जुम्अ: मैं ग़रीब बच्चियों की शादी के लिए तहरीक की थी कि शादी के लिए कुछ राशि प्रदान करें। मुझे आश्चर्य हुआ है कि जमाअत ने इस तरह दिल खोलकर इस कुरबानी में हिस्सा लिया है कि आसमान से ख़ुदा तआला के फज़लों की बारिश हुई। उनका सब का व्यक्तिगत उल्लेख तो मेरे लिए संभव नहीं ... इससे अन्य लोगों को तहरीक पैदा हो जाती है। ख़ुदा तआला उन सब को अच्छा बदला दे ... मुझे व्यक्तिगत रूप में तो झिझक थी मगर जो कमेटी बैठी हुई थी। इस काम के लिए उनकी सलाह मानते हुए इस फंड का नाम मरियम शादी फंड रख देता हूँ। उम्मीद है कि अब यह फंड कभी खत्म नहीं होगा और हमेशा ग़रीब बच्चियों को सम्मान के साथ विदा किया जा सकेगा। हालांकि उचित रकम देंगे। बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन किसी ग़रीब माँ बाप को यह ग़म नहीं रहेगा कि हम ने अपनी बेटी को कुछ नहीं दिया। इज़्ज़त के साथ कुछ कपड़ों में अच्छी तरह विदा करेंगे। "

(ख़ुत्बा जुम्अ: 28 फरवरी 2003 फज़ल इंटरनेशनल 4 अप्रैल 2003)

हज़रत ख़लीफतुस मसीह अलखामिस अय्यदुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने शादी ब्याह के अवसर पर फज़ूल खर्ची से बचने की हिदायत की और इन अवसरों पर ग़रीब बच्चियों की शादी के लिए रकम उपलब्ध कराने की हिदायत करते हुए फरमाया।

"जो लोग बाहर के देशों में हैं अपने बच्चों की शादियों में अनगिनत खर्च करते हैं अगर साथ ही पाकिस्तान, भारत और अन्य ग़रीब देशों में ग़रीब बच्चियों की शादी के लिए कोई राशि विशिष्ट कर दिया करें तो जहाँ वे एक घर की खुशियों के सामान कर रहे होंगे वहाँ यह एक जारी रहने वाला सदका होगा जो अपनी बच्चों की ख़ुशियों की भी गारंटी होगा। अल्लाह तआला नेकियों को बर्बाद नहीं करता तो कुछ सामर्थवान लोगों में बहुत अधिक दिखावा और खर्च करने का शौक होता है शादियों पर बेशुमार खर्च कर रहे हैं कई-कई प्रकार के भोजन पक रहे होते हैं जो अक्सर नष्ट हो जाते हैं। यहां से जब विशेष रूप से पाकिस्तान में जाकर विवाह करते हैं तो सादगी से शादी करें और बचत से किसी गरीब की शादी के लिए पैसे दें तो अल्लाह की रज़ा हासिल कर रहे होंगे।

खानों के अलावा शादी कार्डों पर भी भारी खर्च किया जाता है। दावत का कार्ड तो पाकिस्तान में एक रुपए में भी छप जाता है यहां भी काफी मामूली सा पांच सात पेंस (Pence) में छप जाता है तो दावत नामा ही भेजना है कोई प्रदर्शन तो नहीं करना। लेकिन अकारण महंगे महंगे कार्ड छपवाए जाते हैं पूछो तो कहते हैं कि बड़ा सस्ता छपा है सिर्फ पचास रुपये में। अब यह सिर्फ पचास रुपए जो अगर कार्ड पांच सौ की संख्या में छपवाए गए हैं तो यह पाकिस्तान में पच्चीस हज़ार रुपए बनते हैं और पच्चीस हज़ार रुपये अगर किसी ग़रीब को शादी के मौके पर मिलें तो वे ख़ुशी और शुकराने की भावनाओं से डूब जाता है। तो इस तरह कई जगहें हैं जहां बचत की जा सकती है और जिन्हें इतनी ताकत है कि वे कहें कि हम बच्चियों की शादियों में भी मदद कर सकते हैं इसलिए हमें इस प्रकार की छोटी बचत की ज़रूरत नहीं है तो ऐसे लोगों को कम से कम जो खर्च वह अपने बच्चों की शादी में करते हैं उसका एक प्रतिशत तो गरीब की शादी के लिए मदद के लिए चंदा देना चाहिए। पाकिस्तान में भी कई लोग हैं जो बड़ी फिज़ूल खर्ची करते हैं कुछ बाहर जाकर कर रहे हैं और कुछ वहां रहने वाले कर रहे होते हैं। या जो फिज़ूलखर्ची नहीं भी करते उनकी ऐसी ताकत होती है कि बच्चों की शादी में सहायता कर सकें। इन सब को आगे आना चाहिए और इस नेक काम में हिस्सा लेना चाहिए। आमतौर एक साधारण शादी पच्चीस तीस हज़ार रुपए की मदद से हो जाती है। कुछ न कुछ तो उन्होंने ख़ुद भी किया होता है इतनी मदद हो जाए तो लोगों की बड़ी मदद हो जाती है। तो फिर यह गरीब आदमी के लिए आराम का कारण बन रहा होता है। बहरहाल प्रत्येक को अपनी तौफ़ीक़ अनुसार इस फंड में अवश्य भाग लेना चाहिए। अल्लाह तआला सबको ताकत दे।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 3 जून 2005, ख़ुत्बाते मसरूर जिल्द 3, पृष्ठ 334)

ईद के अवसर पर हज़रत ख़लीफतुस मसीह अल ख़ामिस अय्यदुल्लाह तआला बेनसरेहिल ने फरमाया :

" हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की एक तहरीक था मरियम शादी फंड, उसमें अगर बाहर के देशों में रहने वाले चंदा दें तो कई ग़रीब बच्चियों की शादी में सहायता हो जाती है शुरू में विभिन्न देशों से वादे हुए कि उन्होंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह कि सेवा में पेश किए लेकिन वह एक बार पेश करके ख़त्म हो गए यद्यपि कि जमाअत अपने संसाधनों के दृष्टि से मदद करती रहती है चाहे इस कोश में राशि हो या न हो लेकिन पूरी तरह फिर भी नहीं की जा सकती अगर अमीर अपने बच्चों की शादी में ग़रीबों का ख्याल रखें तो जहां अल्लाह तआला उन को अल्लाह के लिए खर्च करने पर सवाब दे रहा होगा वहाँ उनके ग़रीबों की दुआओं से उन के अपने बच्चों के घरों में भी बरकत पड़ रही होगी, कई अहमदी अल्लाह तआला की कृपा से ऐसे हैं जिन्हें इस बात का एहसास है कि अपने एक बच्चे की शादी पर दस ग़रीब बच्चियों की शादी का खर्च उठाते हैं, कुछ फुज़ूल खर्च दो दो लाख रुपये का कपड़ा बना लेते हैं जबकि इस राशि से पांच गरीब बच्चियों का दहेज बन जाता है तो ऐसे लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर इतने कीमती जोड़ी बनाने की अल्लाह तआला ने उन्हें ताकत दी हुई है तो ग़रीबों को कम से कम एक महंगे जोड़े के बराबर तो दें ताकि वह भी गरीबों की दुआएं ले सकें, यह इतने महंगे जोड़े जो यह तो एक बार या दो बार पहन कर बर्बाद हो जाते हैं, काम नहीं आते लेकिन गरीब की दुआएं और अल्लाह तआला की ख़ुशी तो हमेशा साथ रहने वाली चीज़ है।

(ख़ुत्बा ईदुल फितर 13 अक्तूबर 2007 ई)

हुज़ूर अनवर और फरमाते हैं।

"अमारों को पहले भी कह चुका हूँ अब भी कहता हूँ फिर से तहरीक कर देता हूँ कि मरियम शादी फंड में ज़रूर शामिल हुआ करें और विशेष रूप से जो धनवान हैं और जब अपने बच्चों की शादियां होती हैं तब अवश्य ध्यान में रखा करें कि किसी न किसी ग़रीब की शादी करवानी है।"

(दैनिक फज़ल 28 फरवरी 2005 ई)

अल्लाह तआला हम सब को अपनी तौफ़ीक़ से बढ़कर इस तहरीक में शामिल होने की शक्ति प्रदान करे। आमीन

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

23 मार्च का दिन जमाअत अहमदिया में बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है। इस दिन अल्लाह तआला ने जो उम्मते मुहम्मदिया या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक वादा फरमाया था वह पूरा हुआ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हुई और इस्लाम के पुनर्जागरण का ज़माना शुरू हुआ।

इस दिन के बारे में जमाअत में मसीह मौऊद दिवस के जलसे भी होते हैं जिस में जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के उद्देश्यों और आप की जमाअत की स्थापना और इस दिन के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया वहाँ जमाअत को लोगों ने शुक्र भी अदा किया कि अल्लाह तआला ने हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश मानते हुए आने वाले मसीह मौऊद और महदी मौऊद को मानने और उसे सलाम पहुंचाने की ताकत दी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से आप की बेअसत के उद्देश्यों का वर्णन और इस हवाले से जमाअत के लोगों को अपनी ज़िम्मेदारियों की तरफ ध्यान देने की तरफ नसीहत।

23 मार्च के दिन एक दूसरे को यदि तो इस इरादे से मुबारकबादें दी थीं कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना और इस बात का शुक्र और बधाई थी कि आपके मानने से हम न हिदायत प्राप्त मसलमानों में शामिल हो गए जो धर्म के मददगार और उसकी ताकत को दुनिया में फैलाने वाले हैं निश्चित रूप से यह मुबारकबादें देना उन बधाई देने वालों का हक था, इस में कोई हर्ज नहीं और इसमें कोई बिदअत नहीं।

ख़िलाफत के कदमों से आगे बढ़ने की कोशिश न करें जो भी होगा वह फिसल जाएगा याद रखें। एक इकाई रखें अपनी ज़ौकी बात को जमाअत के लोगों पर ठूंसने या लागू करने की कोशिश न करें।

आदरणीया महमूदा सादी साहिबा पत्नी आदरणीय मुस्लेह दीन साहिब सादी (मरहूम), और आदरणीय नूरुद्दीन चिराग़ पुत्र आदरणीय चिराग़ दीन साहिब (मरहूम) की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर, और आदरणीया सय्यदा मुबारका बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय अब्दुल बारी साहिब तअल्लुक दार की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब और मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 25 मार्च 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

दो दिन पहले 23 मार्च थी। यह दिन जमाअत अहमदिया में बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है। इस दिन अल्लाह तआला ने जो उम्मते मुहम्मदिया या आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक वादा फरमाया था वह पूरा हुआ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई पूरी हुई और इस्लाम के पुनर्जागरण का ज़माना शुरू हुआ। या कह सकते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम को उस दिन मसीह मौऊद और महदी मौऊद होने की घोषणा की अनुमति दी जिन्होंने जहां ख़ुदा तआला की तौहीद को दुनिया में स्थापित करने के लिए बराहीन (दलीलों) और तर्क पेश करने थे वहाँ इस्लाम की श्रेष्ठता सभी धर्मों पर सही और पूर्ण धर्म साबित करते हुए साबित करनी थी और अल्लाह तआला के अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत से दिलों को भरना था।

इसलिए आज हम वे भाग्यशाली लोग हैं जो मसीह मौऊद की जमाअत में शामिल हैं और जैसा कि मैंने कहा कि इस दिन का महत्त्व है, जमाअत में इस दिन का महत्तव का ध्यान में रखते हुए मसीह मौऊद दिवस के जलसे भी होते और आज से दो दिन पहले भी बहुत से जलसे हुए जिस में जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के उद्देश्यों और आप की जमाअत की स्थापना और इस दिन के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया वहाँ जमाअत को लोगों ने शुक्र भी अदा किया कि अल्लाह तआला ने हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश मानते हुए आने वाले मसीह मौऊद और महदी मौऊद को मानने और उसे सलाम पहुंचाने की तौफीक दी।

हमें याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानना जहां ख़ुशी और शुक्र का स्थान है वहां हमारी ज़िम्मेदारियां भी बढ़ाता है। इसलिए हमें अपनी ज़िम्मेदारियों की पहचान और उनको अदा करने की ओर ध्यान देने की ज़रूरत है।

हमारी ज़िम्मेदारियां क्या हैं ? हमारी ज़िम्मेदारियां उन कामों को आगे चलाना है जिन को अदा करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भेजे गए थे तभी हम उन लोगों में से हो सकते हैं जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर नई ज़मीन और नया आसमान बनाने वालों में शामिल होना था। अतः उन ज़िम्मेदारियों को समझने के लिए हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ ही देखना होगा कि आपकी बेअसत के उद्देश्य क्या थे और हम ने उन्हें किस हद तक समझा है और अपने पर लागू किया है और उन्हें आगे फैलाने में अपनी भूमिका निभाई है या भूमिका निभा रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"वह काम जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त किया है वह यह है कि ख़ुदा और उसकी सृष्टि के संबंध में जो दूरी हो गई है उसे दूर कर के मुहब्बत और ईमानदारी के संबंध फिर से स्थापित करूं" और दूसरी बात कि "सच्चाई की अभिव्यक्ति के लिए धार्मिक युद्ध समाप्त करके सुलह की बुनियाद डालूं। और" फिर यह कि "धार्मिक सच्चाइयां जो दुनिया की आंख से छिप गई हैं उन्हें दिखा दूं चौथी बात यह "और रूहानियत जो नफ्स के अंधेरे के नीचे दब गई है इसका नमूना दिखलाऊं। और" फिर यह कि ख़ुदा की शक्तियां जो इंसान के अंदर प्रवेश कर के ध्यान या दुआ के माध्यम से प्रकट होती हैं व्यवहार के द्वारा, न सिर्फ कथन से उन्हें वर्णन करूं और सबसे अधिक यह कि वह शुद्ध और चमकती हुई तौहीद जो प्रत्येक शिर्क की मिलावट से खाली है उसका फिर से क़ौम में हमेशा के लिए पौधा लगा दूं। और यह सब मेरी ताकत से नहीं होगा बल्कि ख़ुदा की शक्ति से होगा जो आसमान और ज़मीन का ख़ुदा है।

इसलिए इस उद्धरण में सात मौलिक और महत्त्वपूर्ण बातें बयान की गई हैं जो इस समय की ज़रूरत है जिसका सार रूप में इस उद्धरण में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख किया है और जब आप ने यह फरमाया कि इस काम के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है तो ज़ाहिर है कि इसका मतलब यही है कि आप के मानने वाले इन बातों को अपने अंदर पैदा करके इस्लाम की सुंदरता और ज़िन्दा धर्म होने को दुनिया को दिखाएं। इसलिए हमारा पहला कर्तव्य और सबसे बड़ा फर्ज़ जो हमारा बनता है कि ख़ुदा तआला से संबंध में बढ़ें और इसे मज़बूत करें। ख़ुदा तआला और उसके रसूल और उसके धर्म से संबंध और प्रेम और ईमानदारी में बढ़ें। दुनिया को बताएं कि मसीह मौऊद के आगमन के साथ धार्मिक युद्ध का

अंत हो चुका है। यह एक उद्देश्य है। और अब दुनिया को उम्मते वाहिदा (एक उम्मत) बनाने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह सच्चा ग़ुलाम ही है जिसे अल्लाह तआला ने सारे नबियों के लिबास में भेजा। आप के मिशन के अनुसार इस्लाम की सुंदर शिक्षा और उसकी सच्चाई हम ने दुनिया पर स्पष्ट करनी है और इसके लिए हमें अपने व्यवहारों को भी नमूना बनाना होगा। रूहानियत में बढ़ने के नमूने भी हमें स्थापित करने होंगे। अपनी नफ्सानी इच्छाओं को दूर करना होगा। दुनिया को दिखाना होगा कि वह ख़ुदा आज भी इसी तरह दुआओं को सुनता है और अपने नेक बन्दों को, अपने भेजे हुए लोगों को उत्तर भी देता है जिस तरह पहले देता था। अपने नेक बन्दों के दिलों की तसल्ली के साधन भी करता है। दुनिया को हम ने बताना है कि अल्लाह तआला अकेला है। सब कुछ नष्ट होने वाला है समाप्त होने वाला है केवल उसी की हस्ती है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगी। इसलिए हमारा अस्तित्व उस एक और हमेशा रहने वाले ख़ुदा से जुड़ने में ही है।

जब हम 23 मार्च को मसीह मौऊद दिवस मनाते हैं इन बातों के लिए हमें समीक्षा भी करनी चाहिए कि ये बातें हज़रत मसीह मौऊद दुनिया में पैदा करने आए थे और हम जो आप के मानने वाले हैं क्या हम में ये बातें पैदा हो गई हैं या क्या हम इस इंकलाब को अपने अंदर पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं।

फिर और कई स्थानों पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी बेअसत के उद्देश्य के कुछ विवरण भी बयान किए हैं। आप अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण मैं पेश करता हूँ। एक अवसर पर आप ने फरमाया कि "यह विनीत तो केवल इस उद्देश्य के लिए भेजा गया है कि ताकि यह पैग़ाम अल्लाह की सृष्टि को पहुँचाए कि सभी वर्तमान धर्मों में से वह धर्म सच्चाई पर और अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार जो कुरआन लाया है और मुक्ति के दरवाज़े में दाख़िल होने के लिए दरवाज़ा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह है

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 132 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर एक अवसर पर आप ने फरमाया

"इस बात को भी दिल से सुनो कि मेरे भेजने का उद्देश्य क्या है। (लक्ष्य क्या है? मुख्य उद्देश्य क्या है?) मेरे आने का उद्देश्य और गंतव्य केवल इस्लाम का नवीकरण और समर्थन है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि मैं इसलिए आया हूँ कि कोई नई शरीअत सिखाऊं या नए आदेश दूँ या कोई नई किताब नाज़िल होगी। हरगिज़ नहीं। अगर कोई आदमी यह समझता है तो मेरे समीप वह सख्त गुमराह और नास्तिक है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर शरीयत और नबुव्वत का अंत हो चुका है। अब कोई शरीयत नहीं आ सकती। कुरआन मजीद ख़ातुमल कुतुब है। इस में अब एक शब्द या बिंदु की कमी या अधिकता की गुंजाइश नहीं है। हाँ यह सच है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकत और फैज़ और कुरआन शरीफ की शिक्षा और मार्गदर्शन की बरकतें समाप्त नहीं हो गईं। वह हर समय ताज़ा-ताज़ा मौजूद हैं और इन्हीं फैज़ों और बरकतों के सबूत के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे खड़ा किया है। इस्लाम की हालत जो इस समय है वह छुपी नहीं इत्तेफाक से मान लिया गया है कि सभी प्रकार की कमज़ोरियों और अवनति का निशाना मुसलमान हो रहे हैं हर पहलू से वे गिर रहे हैं। उनकी ज़बान साथ है तो दिल नहीं है और इस्लाम अनाथ हो गया है। ऐसी हालत में ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है कि मैं इस का समर्थन और संरक्षण करूं और अपने वादा के अनुसार भेजा है। क्योंकि उसने फरमाया था

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(सूरह अल्हिज्र : 10)

अर्थात हम ने यह ज़िक्र उतारा है और हम ही उसकी रक्षा करेंगे।(अर्थात कुरआन की शिक्षा को फैलाने और इस की सुरक्षा के लिए ख़ुदा तआला ने अपनी ज़िम्मेदारी ली है और इसी उद्देश्य के लिए मसीह मौऊद को भेजा है।)

आप फरमाते हैं कि "अगर इस समय समर्थन और सहायता और रक्षा न की जाती तो वह और कौन सा समय आएगा ? अब इस चौदहवीं सदी में वही हालत हो रही है जो बदर के मौका पर हो गई थी। जिसके लिए अल्लाह तआला फरमाता है।

وَ لَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّ اَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

(सूरह आले इम्रान आयत : 124) (अर्थात और बदर की लड़ाई में जब तुम तुच्छ थे तो तुम्हें अल्लाह तआला सहायता दे चुका है।) फरमाया कि "इस आयत में भी वास्तव में एक पेशगोई केंद्रित थी अर्थात जब चौदहवीं शताब्दी में इस्लाम निर्बल और कमज़ोर हो जाएगा। तब अल्लाह तआला अपने रक्षा के वादा के अनुसार उसकी सहायता करेगा। फिर तुम क्यों आश्चर्य करते हो कि उसने इस्लाम की सहायता की? मुझे इस बात का अफसोस नहीं कि मेरा नाम दज्जाल और कज़्ज़ाब रखा जाता है और मुझ पर आरोप लगाए जाते हैं। इसलिए कि यह ज़रूर था कि मेरे साथ वही व्यवहार होता जो मुझ से पहले फरस्तादों (भेजे गए नबियों) के साथ हुआ ताकि मैं भी इस प्राचीन सुन्नत से हिस्सा पाता।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 245-246 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर एक अवसर पर मसीह मौऊद की बेअसत के उद्देश्यों को बयान फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"मेरे आने के दो उद्देश्य हैं मुसलमानों के लिए यह कि असल तक्वा और पवित्रता पर स्थापित हो जाएं वे ऐसे सच्चे मुसलमान हों जो मुसलमान के अर्थ में अल्लाह तआला ने चाहा और ईसाइयों के लिए कसर सलीब हो और उनका कृत्रिम ख़ुदा नज़र न आए। दुनिया उसे बिल्कुल भूल जाए। ख़ुदा की इबादत हो। मेरे इन लक्ष्यों को देखकर ये लोग मेरा विरोध क्यों करते हैं। उन्हें याद रखना चाहिए कि जो काम पाखंडी और दुनिया की गंदी ज़िन्दगी के साथ होंगे वह ख़ुद ही इस ज़हर से मारे जाएंगे। क्या काज़ब (झूठा) कभी सफल हो सकता है।?

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَہۡدِیۡ مَنۡ ہُوَ مُسۡرِفٌ کَذَّابٌ

(सूरह अल मोमेनून 29)

(अर्थात बेशक अल्लाह तआला हद से बढ़े और झूठे को कभी सफल नहीं करता।) फरमाया कि "कज़्ज़ाब की हलाकत के लिए उसका झूठ ही काफी है लेकिन जो काम अल्लाह तआला की महिमा और उसके रसूल की बरकतों की अभिव्यक्ति और सबूत के लिए हों और ख़ुद अल्लाह तआला के अपने ही हाथ का लगाया हुआ पौधा हो तो उसकी रक्षा तो ख़ुद फरिशते करते हैं। कौन है जो उन्हें नष्ट कर सके।? याद रखो मेरा सिलसिला अगर केवल दुकानदारी है तो इसका नाम व निशान मिट जाएगा लेकिन अगर ख़ुदा तआला से है और निश्चित रूप से उसी से है तो सारी दुनिया उसका चाहे विरोध करे यह बढ़ेगा और फैलेगा और फरिशते इस की रक्षा करेंगे।" (इंशा अल्लाह) "अगर एक व्यक्ति भी मेरे साथ न हो और कोई भी मदद न दे तब भी मैं विश्वास रखता हूँ कि यह सिलसिला सफल होगा। विरोध की मैं परवाह नहीं करता इस को भी मैं अपने सिलसिले के तरक्की के लिए ज़रूरी समझता हूँ। यह कभी नहीं हुआ कि ख़ुदा तआला का कोई मामूर और ख़लीफा दुनिया में आया हो और लोगों ने चुपचाप इसे स्वीकार कर लिया। दुनिया की तो अजीब हालत है। इंसान कैसा ही सिद्दीक (नेक) प्रकृति रखता हो मगर दूसरे उसका पीछा नहीं छोड़ते वे तो आपत्ति करते ही रहते हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 148 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आज 127 साल होने के बाद भी हम देखते हैं कि अल्लाह तआला के समर्थन आपके साथ हैं और यह सिलसिला अल्लाह तआला की फज़्ल से तरक्की कर रहा है तो यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी हालतों में शुद्ध परिवर्तन पैदा करते हुए अपने आप को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक बनाएँ और इस फ़ैज़ से हिस्सा पाएं जो आप की बेअसत का उद्देश्य है जो आपके मानने से मिलना है। वरना जैसा कि आपने फरमाया आप को हम में से किसी की भी ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला ख़ुद फरिशतों के द्वारा आपकी मदद फरमा कर आप के सिलसिला को तरक्की दे सकता है और देता है।

फिर अपनी बेअसत के उद्देश्य का वर्णन कहते हुए एक अवसर पर आपने फरमाया कि

"ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा कि मैं उन छुपे खज़ानों को दुनिया में प्रकट करूं और नापाक एतराज़ों का कीचड़ जो इन चमकदार जवाहरों पर थोपा गया है इस से उन्हें शुद्ध करूं। ख़ुदा तआला की ग़ैरत इस समय बड़ी जोश में है कि कुरआन शरीफ का सम्मान हर एक दुष्ट दुश्मन के एतराज़ से पवित्र करे। अत: ऐसी स्थिति में कि विरोधी कलम से हम पर वार करना चाहते हैं और करते हैं कितनी बेफकूफी होगी कि हम उनसे लठम लठ्ठा होने को तैयार हो जाएं। मैं तुम्हें खोलकर बतलाता हूं कि ऐसे सूरत में अगर कोई इस्लाम का नाम लेकर लड़ाई झगड़े के तरीके जवाब में धारण करे, तो वह इस्लाम को बदनाम करने वाला होगा और इस्लाम की कभी भी ऐसा मंशा नहीं थी कि बिना कारण और बिना ज़रूरत तलवार उठाई जाए। अब लड़ाईयों का उद्देश्य जैसा कि मैंने कहा है कि फन के रूप में आ कर धार्मिक नहीं रहीं बल्कि सांसारिक स्वार्थ उनका विषय हो गया है। तो कितना अन्याय होगा कि आपत्ति करने वालों को जवाब देने के बजाय तलवार दिखाई जाए। अब समय के साथ जंग का पहलू बदल गया है। (युद्ध का जो पहलू था वह बदल गया है) इसलिए

ज़रूरत है कि पहले अपने दिल और दिमाग़ से काम लें और नफ़सों को शुद्ध करें। नेकी और तक्वा से ख़ुदा तआला से सहायता और जीत चाहें। यह ख़ुदा तआला का एक अटल कानून और स्थिर सिद्धांत है और अगर मुसलमान केवल सिर्फ ज़बानी बातों से मुकाबला में सफलता और विजय पाना चाहें तो यह संभव नहीं। अल्लाह तआला शाब्दिक बातों को नहीं चाहता वह तो वास्तविक तक्वा चाहता और सच्ची पवित्रता को पसंद करता है जैसा कि फरमाया है।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अन्नहल 129)

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 60-61 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: ये तक़्वा है जो हम ने अपने अंदर पैदा करके इस्लाम की सुंदर शिक्षा दुनिया को बतानी है। मुसलमानों को भी बतानी है कि इस्लाम का फैलना तक्वा के अधीन है। तो बजाय ज़ुल्म व अत्याचार में बढ़ने के तक्वा पैदा करो। तक्वा में बढ़ो। यह इस्लाम के नाम पर जो हमले होते हैं यह इस्लाम का समर्थन नहीं है बल्कि यह बदनामी का माध्यम है और मासूमों की हत्या अल्लाह तआला की नाराज़गी का माध्यम बन रही है।

पिछले दिनों में जो बेल्जियम में मासूमों की हत्या हुई है यह दहशत गर्दी जो हुई है जिस से दर्जनों मासूम कत्ल हुए हैं और सैकड़ों घायल हुए हैं यह कभी भी ख़ुदा तआला की ख़ुशी हासिल करने वाले नहीं हो सकते और इस ज़माना में जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खुल कर बता दिया है कि अब धर्म का युद्ध और जंग हराम है, यह हरकतें ख़ुदा तआला की नाराज़गी का कारण बन रही हैं। और इस ज़माना में कोई नहीं कह सकता कि हमें यह संदेश पहुंचा है। हर कोई जानता है कि यह संदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का बड़ा स्पष्ट है कि अब धर्म के लिए यह युद्ध हराम हैं। अल्लाह तआला धर्म के नाम पर अत्याचार करने वालों या मुसलमान होते हुए अत्याचार करने वालों को अक्ल दे चाहे सरकारें हैं या गिराह है कि वे ज़माना के इमाम की आवाज़ को सुनें और ज़ुल्मों से रुक जाएं और असली हथियार का उपयोग करें जो इस ज़माने में मसीह मौऊद को दिया गिया है।

आप एक जगह फरमाते हैं कि

"इस समय जो ज़रूरत है वह वास्तव में समझ लो तलवार की नहीं बल्कि कलम की है। हमारे विरोधियों ने इस्लाम पर जो संदेह किए हैं और विभिन्न साइंसों और तरीकों की दृष्टि से अल्लाह तआला के सच्चे धर्म पर हमला करना चाहा है उस ने मुझे आकर्षित किया है कि कलम का शस्त्र पहनकर इस विज्ञान और बौद्धिक विकास के क्षेत्र में उतरूँ और इस्लाम की रूहानी ताकत और अन्दरूनी शक्ति का करिश्मा भी दिखलाओं। मैं कब इस मैदान के सक्षम हो सकता था। यह तो केवल अल्लाह तआला का फज़ल और उसकी बेहद इनायत है कि वह चाहता है कि मेरे जैसे विनीत इंसान के हाथ से इस धर्म का सम्मान प्रकट हो। मैंने एक समय इन आपत्तियों और हमलों को गिना था कि इस्लाम पर हमारे विरोधियों ने किए हैं उनकी संख्या मेरे विचार और अनुमान में तीन हज़ार हुई थी।" आप फरमाते हैं "और मैं समझता हूँ कि अब तो संख्या और भी बढ़ गई होगी" फरमाया कि "कोई यह न समझ ले कि इस्लाम का आधार ऐसी कमज़ोर बातों पर है कि उस पर तीन हज़ार आपत्तियां हो सकती हैं। नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं। यह आपत्ति तो कम ज्ञान रखने वालों और नादानों की नज़र में आपत्ति है, लेकिन मैं तुम से सच-सच कहता हूं कि मैंने जहां इन आपत्तियों को गिना वहाँ यह भी माना है कि इन आपत्तियों की तह में वास्तव में बहुत ही दुर्लभ सच्चाइयां हैं जो ज्ञान न होने के कारण से आरोप करने वालों को दिखाई नहीं दीं और वास्तव में, यह ख़ुदा तआला की हिक्मत है कि जहां अन्धा ऐतराज़ करने वाला आकर अटका है वहीं तथ्यों और मआरिफ़ का छिपा खज़ाना रखा है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 59-60 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर इस बात का वर्णन कहते हुए कि अल्लाह तआला ने इस्लामी नूर दिखाने के लिए आप को भेजा है और यह कि ईसाइत की आस्था तो एसी है जिस की ख़ुद उन्हें भी समझ नहीं है। आप फरमाते हैं कि यह तो गले पड़ा ढोल है जो ये लोग बजा रहे हैं। अत: उन लोगों के विश्वासों का कहाँ तक उल्लेख किया जाए। तथ्य वही है जो इस्लाम लेकर आया है और ख़ुदा तआला ने मुझे नियुक्त किया कि मैं उस नूर को जो इस्लाम में मिलता है उन्हें जो हकीकत देखने के इच्छुक हैं दिखाऊँ। सच यही है कि ख़ुदा है और एक है और मेरा तो यह धर्म है कि अगर इंजील और कुरआन और सारे नबियों की किताबें भी दुनिया में न होतीं तो भी ख़ुदा तआला की तौहीद साबित थी क्योंकि उसका छाप मानव प्रकृति में मौजूद है। ख़ुदा के लिए बेटा मानना मानो ख़ुदा तआला की मौत सुनिश्चित करना है क्योंकि बेटा तो इसलिए कि वह यादगार हो। अब अगर मसीह ख़ुदा का बेटा है, तो सवाल होगा कि क्या ख़ुदा को मरना है। संक्षेप है कि ईसाइयों ने अपने विश्वासों में न ख़ुदा की महिमा का आधार रखा और न इंसानी कुव्वतों की कदर की है और ऐसी बातों को मान रखा है कि जिनके साथ आसमानी रोशनी का समर्थन नहीं है एक भी ईसाई ऐसा नज़र नहीं आया जो मोजज़ा (चमत्कार) दिखा सके और अपने ईमान को इन निशानों से साबित कर सके जो कि मोमिनों के होते हैं। यह पुण्य और गर्व इस्लाम को ही है कि हर ज़माने में समर्थित निशान उसके साथ होते हैं और इस ज़माने को भी ख़ुदा वंचित नहीं रखा। मुझे इसी उद्देश्य के लिए भेजा है कि समर्थित निशानों से जो इस्लाम की विशेषता है इस ज़माना में भी इस्लाम की सच्चाई दुनिया में प्रकट करूं। मुबारक वह जो एक सलीम (आज्ञाकारी) दिल लेकर मेरे पास हक लेने के लिए आता है और फिर मुबारक वह जो हक देखे तो उसे स्वीकार करता है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 330-331 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर मुसलमानों के ग़लत विश्वासों को रद्द करते हुए कि हज़रत ईसा आसमान पर ज़िन्दा हैं इस हकीकत को खोलकर मुसलमानों को भी बताया कि अल्लाह तआला ने मुझे इसलिए भेजा है कि मैं ग़लत विश्वास को उखाड़ दूं जो ईसाइयों ने मुसलमानों में पैदा कर दिया है। आप फरमाते हैं कि

"हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सलीब पर ज़िन्दा उतर आने और इस दुर्घटना से बच जाने का कुरआन शरीफ में सही और निश्चित ज्ञान दिया गया है मगर अफसोस है कि पिछले हज़ार साल में जहां इस्लाम पर और कई आफ़तें आईं वहां यह मस्ला भी अंधेरे में पड़ गया और मुसलमानों में दुर्भाग्य से यह विचार सुदृढ़ हो गया कि हज़रत मसीह ज़िन्दा आसमान पर उठाए गए हैं और वह क़यामत के क़रीब आसमान से उतरेंगे। मगर चौदहवीं सदी में अल्लाह तआला ने मुझे नियुक्त करके भेजा ताकि आंतरिक रूप से जो ग़लतियाँ मुसलमानों में पैदा हो गई हैं उन्हें दूर कर दूं और इस्लाम की सच्चाई दुनिया में प्रकट करूं और बाहरी रूप से जो आपत्तियां इस्लाम पर की जाती हैं उनका जवाब दूँ और अन्य झूठे धर्मों की सच्चाई खोलकर दिखालाऊं। विशेषता वह धर्म जो सलीबी धर्म है यानी ईसाई धर्म है ग़लत मान्यताओं को उखेड़ दूं जो मनुष्य के लिए ख़तरनाक रूप में हानिकारक है और मनुष्य की रूहानी शक्तियों की तरक्की और विकास के लिए एक रोक है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 331-332 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

एक मौके पर मसीह की ज़रूरत के बारे में बयान फरमाते हुए आपने फरमाया कि "इस समय मसीह के आने की क्या ज़रूरत है?" (सवाल है।) "अगर दूसरे कारणों और ज़रूरतों को छोड़ दिया जाए तो मूसा के सिलसिला से समानता की दृष्टि से भी सख्त ज़रूरत है।" बाकी ज़रूरतें छोड़ो लेकिन जो समानता है हज़रत मूसा की उम्मत के साथ मुसलमानों को इस लिहाज़ से भी ज़रूरत है।) "इसलिए कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मूसा के बाद चौदहवीं सदी में आए थे। अत: मैं तो प्रतिरूप का एक उदाहरण देता हूं लेकिन जो यह कहते हैं कि नहीं ख़ुद हज़रत मसीह दोबारा आएंगे उन्हें भी तो कोई मिसाल पेश करनी चाहिए और अगर वह नहीं कर सकते और विश्वास नहीं कर सकते तो फिर क्यों ऐसी बात करते हैं जो मुहद्दसात में दाख़िल है।" (जो नई पैदा की गई बातें हैं।) "मुहद्दसात से परहेज़ करो क्योंकि वह मौत की राह है। यहूदियों पर अल्लाह तआला का अज़ाब इसलिए नाज़िल हुआ कि उन्होंने ख़ुदा तआला के एक रसूल से इनकार कर दिया और इस इनकार के लिए उन्हें यह परेशानी पेश आई कि उन्होंने रूपक को वास्तविकता पर आधारित समझ लिया।"(यानी एक संकेत की बात थी, रूपक की बात थी, उसे वह समझे कि वास्तव में इसी तरह ही होना है।) "इसका नतीजा यह हुआ कि वह मगज़ोब क़ौम ठहर गई। उसका हमशक्ल मुकदमा अभी भी मौजूद है।" (यानी वही हालत जो उनके साथ थी अब भी वही स्थिति मौजूद है।) "मुझे मुसलमानों की हालत पर अफसोस आता है कि उनके सामने यहूदियों की एक मिसाल पहले से मौजूद है और पांच बार यह अपनी नमाज़ों में "ग़ैरिल मगज़ूब अलैहिम" की दुआ करते हैं और यह भी इत्तेफाक से मानते हैं कि इसका अर्थ यहूदी हैं। फिर मेरी समझ में नहीं आता कि इस रास्ते को क्यों अपनाते हैं। एक ही रंग का मुकदमा जबकि एक रसूल के सामने तय हो चुका है। अब इस फैसले के ख़िलाफ मसीह को ख़ुद आसमान से यह क्यों उतारते हैं ? आप ही मसीह ने ईलिया के मुकदमे का फैसला किया और साबित कर दिया कि दोबारा आने से प्रतिरूप का आना मतलब होता है और

ईलिया के रंग में यूहन्ना आया। मगर अब यह मुसलमान इस मिसाल के होते हुए भी इस समय तक राज़ी नहीं होते जब तक मसीह को आसमान से न उतार लें लेकिन मैं कहता हूँ कि तुम और तुम्हारे सब सहायक मिलकर दुआएं करो कि मसीह आसमान से उतर आए तो देख लो कि वह उतरता है या नहीं। मैं निश्चित रूप से कहता हूँ कि अगर सारी उम्र टकरें मारते रहो और ऐसी दुआ करते- करते नाक भी रगड़े जाएं तब भी वह आसमान से नहीं आएगा क्योंकि आने वाला तो आ चुका।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 331-332 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

काश कि इस बात को मुसलमान समझ लें और अल्लाह तआला द्वारा भेजे हुए का विरोध करने की बजाय साथ जुड़ कर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को दुनिया में लागू करने वाले बनें और हर स्तर पर न्याय और शांति स्थापित करने की कोशिश करें। मुसलमानों के ख़िलाफ जो ग़ैर मुस्लिम और धर्म से दूर वर्ग जो है उन्हें इस्लाम की असली तस्वीर दिखाकर इस्लाम की सेवा करने वाले मुसलमानों को बनना चाहिए।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी सच्चाई पर चार प्रकार के निशानों का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि

"प्रथम अरबी जानने का निशान है और यह तब से मुझे मिला है जब कि मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब ने लिखा कि यह विनीत अरबी का एक सीग़ा (सूत्र) नहीं जानता हालांकि हम ने पहले कभी दावा नहीं किया था कि अरबी का "सीग़ा" आता है। जो लोग अरबी गद्य और लेखन में पढ़े हैं वह कठिनाइयों का मूल्यांकन कर सकते हैं और उसके गुणों का ध्यान पर रख सकते हैं।" आप फरमाते हैं कि "मौलवी साहिब (मौलवी अब्दुल करीम साहिब मतलब था) शुरू से देखते रहे हैं कि कैसे अल्लाह तआला ने एजाज़ (चमत्कार) के रूप में मदद की है। बड़ी मुश्किल आकर यह पड़ती है जब ठेठ भाषा का शब्द उचित अवसर पर नहीं मिलता तब ख़ुदा तआला वह शब्द "इलकाय" करता है। नई और बनावटी भाषा बना लेना आसान है मगर ठेठ भाषा कठिन है। फिर हम ने इन पुस्तकों को बहुमूल्य इनामों के साथ प्रकाशित किया है और कहा है कि तुम जिस से चाहो मदद ले लो और चाहे भाषाविद भी मिला लो। मुझे ख़ुदा तआला ने यकीन दिला दिया है कि वे हरगिज़ समर्थ नहीं हो सकते क्योंकि यह चिन्ह कुरआन के चमत्कार में से ज़िल्ली (प्रतिरूप) रूप में मुझे दिया गया है।

दूसरा यह है कि "दुआओं का स्वाकीर होना। मैंने अरबी पुस्तकों के दौरान अनुभव कर के देख लिया है कि कितनी बार मेरी दुआएँ स्वीकार हुई हैं। एक-एक शब्द पर दुआ की और मैं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो छोड़ता हूँ। उन का स्थान तो बहुत उच्च है।" (क्योंकि उनके माध्यम और अनुसरण से यह सब कुछ मिला है) और मैं कह सकता हूँ कि मेरी दुआएं इतनी स्वीकार हुई हैं कि किसी की नहीं हुई।" (आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अलावा और किसी नबी की भी इतनी दुआ स्वीकार नहीं हुई जितनी आपने फरमाया कि मेरी हुई हैं।) मैं नहीं कह सकता कि दस हज़ार या दो लाख या कितनी और कुछ निशान स्वीकृति के तो ऐसे हैं कि एक ज़माना उन्हें जानता है।

तीसरा निशान पेशगोईयां है यानी ग़ैब का प्रकट होना। यूं तो ज्योतिषी और रम्माल लोग भी अनुमान लगा कर कुछ बातें ऐसी कह देते हैं कि उनका कुछ न कुछ हिस्सा ठीक होता है और ऐसा ही इतिहास हमें बतलाता है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में भी याजक लोग थे जो ग़ैब की ख़बरें बतलाते थे जैसे "सतीह" भी एक याजक था मगर इन अनुमान लगाने वालों, रम्मालों और पुजारियों का ग़ैब जानने वालों के भविष्य जानने और अल्लाह तआला की ओर से भेजे गए और इलहाम प्राप्त का ग़ैब बयान करना में यह अंतर है कि मुलहम का ग़ैब अपने अंदर इलाही ताकत और इलाही डर रखता है इसलिए कुरआन करीम ने स्पष्ट रूप से कहा है कि لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (अल्जिन्न: 28) यहाँ "इज़हार" का शब्द ही प्रकट करता है कि उसके अंदर एक शौकत और शक्ति होती है।

चौथा निशान क़ुरआन के ज्ञान और मआरिफ़ हैं क्योंकि कुरआन के मआरिफ़ उस व्यक्ति के सिवा और किसी से नहीं खुल सकते जो पवित्र हो चुका हो।

لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल्वाकिया: 80)

मैंने कई बार कहा है कि मेरे विरोधी भी एक सूरह की व्याख्या करें और मैं भी व्याख्या करता हूँ। फिर मुकाबला कर लिया जाए मगर किसी ने हिम्मत नहीं की। मुहम्मद हुसैन आदि ने तो यह कह दिया कि उन्हें अरबी का "सीग़ा" नहीं आता और जब किताबें प्रस्तुत की गईं तो सतही और हलके बहाना करके टाल दिया कि यह अरबी तो अरबी कचालू है मगर यह न हो सकता है कि एक पृष्ठ ही बनाकर पेश कर देता और दिखा देता कि अरबी यह है। अत: यह चार निशान हैं जो विशेष रूप से मेरी सच्चाई के लिए मुझे मिले हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 277-278 प्रकाशन यू.के)

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब लिखते हैं। 17 अगस्त 1899 ई को उन्होंने लिखा कहा कि कुछ दिन हुए बरेली से एक व्यक्ति ने हज़रत की सेवा में लिखा कि क्या आप वही मसीह मौऊद हैं जिस के बारे में रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हदीसों में ख़बर दी है? ख़ुदा तआला की कसम खाकर आप इस का जवाब लिखें। (मौलवी अब्दुल करीम साहिब ख़त का जवाब दिया करते थे कहते हैं कि) मैंने सामान्य रूप से रसाला "तरयाकुल क़ुलूब" से दो ऐसे वाक्य जो उसका काफी जवाब हो सकते थे लिख दिए। वह व्यक्ति उस पर संतुष्ट न हुआ (तसल्ली नहीं हुई) "और फिर मुझे संबोधित करके लिखा कि मैं चाहता हूँ कि मिर्ज़ा साहिब ख़ुद अपनी कलम से क़सम खा कर लिखें कि आया वह वही मसीह मौऊद हैं जिनका उल्लेख हदीसों और कुरआन शरीफ में है? मैं शाम की नमाज़ के बाद दवात कलम और कागज़ हज़रत के (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के) आगे रख दिया और निवेदन किया कि एक व्यक्ति ऐसा लिखता है। हज़रत (साहिब) ने तुरंत काग़ज़ हाथ में लिया और यह कुछ पंक्तियां लिख दीं।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा कि

" मैं ने पहले भी नीचे लिखे विस्तृत स्वीकार को अपनी किताबों में कसम के साथ लोगों पर ज़ाहिर किया है और अब भी इस पर्चा में ख़ुदा तआला की कसम खाकर लिखता हूं जिसके हाथ में मेरी जान है कि वही मसीह मौऊद हूँ जिसकी ख़बर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन सहीह हदीसों में दी है जो सही बुखारी और मुस्लिम और सहीह दूसरी में दर्ज हैं। वकफा बिल्लाह शहीद। (और गवाही के लिए अल्लाह काफी है। अर्राकिम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अफ़ा अनहो व अय्यदहो 17 अगस्त 1899 ई."

मौलवी साहिब लिखते हैं कि "इस उल्लेख से मेरे दो उद्देश्य हैं एक यह है कि अपनी जमाअत का ईमान बढ़े और उन्हें वही आनन्द और ख़ुशी प्राप्त हो जो यहाँ भाग्यशाली लोगों को उस घड़ी मिला और उन्होंने सच्चे दिल से स्वीकार किया कि उन्हें नया ईमान मिला है और दूसरे यह कि इंकार करने वाले और शंका करने वाले इस कसम पर ठंडे दिल से विचार करें और सोचें कि कज़्ज़ाब (झुठा) और परेशान मुफ़्तरी की यह शान है और उसे यह साहस हो सकती है कि इज़्ज़त वाले ख़ुदा की ऐसी और इस तरह और ऐसी भीड़ में कसम खाए। अल्लाहो अकबर अल्लाहो अकबर।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 326-327 प्रकाशन यू.के)

फिर जमाअत के लोगो को नसीहत देते हुए एक अवसर पर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मैं नहीं चाहता कि कुछ शब्द तोते की तरह बैअत के समय रट लिए जाएं। इससे कुछ लाभ नहीं। आत्म शुद्धि का ज्ञान प्राप्त करो आत्म शुद्धि का इल्म हासिल करो कि ज़रूरत इसी की ही है।" (यानी कि समझो कि आत्म शुद्धि क्या चीज़ है फिर अपने ऊपर लागू भी करो।) "हमारा यह उद्देश्य हरगिज़ नहीं कि मसीह की वफात ज़िन्दगी में झगड़े और विवाद करते फिरो। यह एक छोटी सी बात है। इसी पर बस नहीं यह तो एक ग़लती थी जिसकी हम ने सुधार कर दिया लेकिन हमारा काम और हमारा उद्देश्य अब इससे बहुत दूर है और वह यह है कि तुम अपने अंदर एक बदलाव पैदा करो और वास्तव में एक नए इंसान बन जाओ इसलिए प्रत्येक को तुम में से ज़रूरी है कि वह इस रहस्य को समझे और ऐसा बदलाव करे कि वह कह सके कि मैं और हूँ।" आप फरमाते हैं कि "मैं फिर कहता हूँ कि निश्चित रूप से वास्तव में जब तक एक अवधि तक हमारी संगत में नहीं रहोगे कोई यह न समझे कि मैं और हो गया हूँ उसे लाभ नहीं पहुंचता।" फरमाया "प्रकृति और तर्कसंगत स्थिति और भावनाओं की हालत में उन्नत स्तर की सफाई प्राप्त हो जाए तो कुछ है नहीं तो कुछ भी नहीं।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 72-73 प्रकाशन यू.के)

फिर आपने फरमाया कि "अगर तुम ईमानदार हो तो शुक्र करो और शुक्र के सजदे करो कि वो ज़माना जिसका इंतजार करते-करते तुम्हारे बुजुर्ग बाप गुज़र गए और असंख्य रूहें इस शौक में ही सफर कर गईं।"(आप ने मुसलमानों को सम्बोधित करके फरमाया) "वह तुम ने पा लिया अब उसकी कदर करना या न

करना और इससे लाभ उठाना या न उठाना तुम्हारे हाथ में है। मैं इस को बार-बार बयान करूंगा और इस अभिव्यक्ति से मैं रुक नहीं सकता कि मैं वही हूं जो समय पर सृष्टि के सुधार के लिए भेजा गया तो धर्म को ताज़ा रूप में दिलों में स्थापित कर दिया जाए। इस तरह भेजा गया हूँ जिस तरह से वह व्यक्ति जो कलीममुल्लाह (हज़रत मूसा अभिप्राय) के ख़ुदा की तरफ से भेजा गया था जिस की रूह हेरोदेस की हुकूमत के ज़माने में बहुत तकलीफों के बाद आसमान से उठाई गई। अत: जब दूसरा कलीममुल्लाह जो वास्तव में सब से पहला और सय्यदुल अंबिया है दूसरे फिराऔनों को बरबाद करने के लिए आया जिसके पक्ष में है कि

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۢ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

(सूरह अल्मुज़म्मित 16)

तो उसे भी जो अपनी गतिविधियों में कलीमुल्लाह का मसील (प्रतीरूप) मगर रुतबे में इससे अधिक बुजुर्ग था एक प्रतिरूप मसीह का वादा किया गया और वह मसील मसीह शक्ति और फितरत और मसीह मरियम की विशेषता पाकर उसी ज़माने की तरह और इसी अवधि के करीब-करीब जो पहले कलीम के ज़माने से मसीह मरियम के ज़माने तक यानी चौदहवीं सदी में आसमान से उतरा। और वह उतरना उतना रूहानी था जैसा कि पूर्ण लोगों का आरोहण के बाद अल्लाह की सृष्टि के सुधार के लिए उतरना होता है और सब बातों में उसी ज़माने के समान ज़माना में उतरा जो मसीह मरियम के उतरने का ज़माना था तो समझने वालों के लिए निशान हो। परन्तु हर एक को चाहिए कि इनकार करने में जल्दी न करे तो ख़ुदा तआला से लड़ने वाला न ठहरे। दुनिया के लोग ग़लत विचार और अपनी पुरानी अवधारणाओं पर जमे हुए हैं वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे मगर जल्द ही वह समय आने वाला है जो उनकी ग़लती उन पर प्रकट कर देगा। दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।"

(फतह इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 7-9)

तो हम भाग्यशाली हैं कि हम ने आने वाले मसीह मौऊद को मान लिया और बैअत के साथ अपने अन्दर शुद्ध परिवर्तन पैदा करने और कुरआन की शिक्षा को अपने ऊपर लागू करने का वादा किया और उन लोगों में शामिल हुए जो शुक्र के सजदे करने वाले हैं न कि नज़रें फेर कर गुज़र रहे हैं। यह अल्लाह तआला का हम पर फज़ल और रहम है कि अल्लाह तआला ने हमें उस ज़माने में पैदा किया जब मसीह मौऊद प्रकट हुआ और इस्लाम का पुनर्जागरण शुरू हुआ और वह अंधेरा ज़माना बीत गया जिस में पहले लोग जिस में पड़े हुए थे। वो ज़माना जो इस्लाम के पुनर्जागरण का ज़माना था। हम इस में पैदा हुए जो इस्लाम के पुनर्जागरण का ज़माना था जिसके इंतजार में असंख्य नेक रूहें इस दुनिया से चली गईं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें ख़ुदा से मिलाया जो ज़िन्दा ख़ुदा है जो आज भी सुनता है और बोलता है जैसे पहले सुनता और बोलता था। इसलिए हमें आभारी होना चाहिए।

इस संदर्भ में एक बात और भी करना चाहता हूँ पिछले दिनों 23 मार्च को लेकर कुछ लोग जो आजकल तरीका है एक दूसरे को masseges के माध्यम से फोन पर, वाट्स अप एप्लिकेशन आदि पर मुबारकबादें दे रहे थे। अगर तो इस इरादे से मुबारकबादें दी थीं कि हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना और इस बात का शुक्र और बधाई थी कि आपके मानने से हम नि हिदायत प्राप्त मुसलमानों में शामिल हो गए जो धर्म के मददगार और उसकी ताकत को दुनिया में फैलाने वाले हैं निश्चित रूप से यह मुबारकबादें देना उन बधाई देने वालों का अधिकार था, इस में कोई हर्ज नहीं और इसमें कोई बिदअत भी नहीं।

मुझे आश्चर्य है उन बधाई देने वालों को एक साहिब ने इन्हीं संदेशों में अपने संदेश के माध्यम से एक बड़ा ख़त लिखकर सख्ती से रोका और कहा कि इस तरह तुम लोग बिदअतों में पड़ जाओगे जैसा कि बाकी मुसलमान पड़ गए हैं। आश्चर्य है उन साहिब पर जो मेरे विचार में दीनी इल्म भी रखते हैं और निज़ाम जमाअत का भी उन्हें पता है। यह कैसे कह सकते हैं कि तुम बिदअतों में पड़ जाओगे। बाकी मुसलमानों के पास ख़िलाफत की बरकत नहीं है जो कि अहमदियों के पास हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की वजह से है और अगर कोई ग़लत बात या बिदअत पैदा होती नज़र आएगी तो अगर ख़िलाफत सही है और ख़िलाफत हक्का है तो ख़ुद ही इंशा अल्लाह तआला उसे रोक लेगी। फिर इस तरफ भी देखना चाहिए कि लोगों की इरादों पर संदेह नहीं करना चाहिए। इन्नमल आमालो बिन्नय्यात भी है। लोगों की निय्यतों पर शक नहीं करना चाहिए। किसी ने नेक निय्यत से की होंगी। इसलिए इन साहिब को भी ख़िलाफत की ढाल के पीछे रहते हुए बात करनी चाहिए थी। ख़िलाफत के कदमों से आगे बढ़ने की कोशिश न करें। यह याद रखें कि जो करेगा वह फिसल जाएगा। एक इकाई रखें अपनी ज़ौकी बात को जमाअत के लोगों पर ठूंसने या लागू करने की कोशिश न करें। ऐसे लोगों के लिए मैं एक उदाहरण देता हूँ यह तो ऐसी बात नहीं है कि जो बहुत ग़लत हो लेकिन कुछ बिदअतें जो मुसलमानों में जारी हैं उनके बारे में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क्या दृष्टिकोण था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक बार "कज़ाए उमरी" जो जुमअतुल विदा पर लोग पिछली छोड़ी हुई नमाज़ें पढ़ते हैं। उसके बारे में सवाल किया कि सारी नमाज़ें छोड़ी हुई जुमअतुल विदा में पढ़ लेते हैं या जुम्अ: अलविदा पढ़कर समझते हैं कि नमाज़ें माफ हो गईं। इस बारे में सवाल किया आप तो आपने फ़रमाया कि यह व्यर्थ बात है कोई शक नहीं बिल्कुल फ़जूल बात है मगर फरमाया कि एक बार एक व्यक्ति हज़रत अली के ज़माना में असमय नमाज़ पढ़ रहा था किसी ने हज़रत अली से कहा कि उसे रोकते क्यों नहीं तो उन्होंने हज़रत अली ने कहा कि मुझे डर है कि कहीं इस आयत के नीचे आरोपी न बन जाऊं कि

اَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ يَنۡهٰى ۙ عَبۡدًا اِذَا صَلّٰى (सूरह अलक 10-11)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हां अगर किसी ने जान बूझकर नमाज़ इसलिए छोड़ दी है कि कज़ाए उमरी के दिन पढ़ लूँगा तो वह नाजायज़ है और अगर अफसोस के रूप में सुधार के रूप में करता है तो पढ़ने दो क्यों मना करते हो। आख़िर दुआ ही करता है। हाँ, इस में कम हम्मती अवश्य है। फिर आप ने फरमाया कि देखो मना करने से कहीं आप भी इस आयत के नीचे न आ जाओ।

इसलिए जिन्हें फतवे का हक था वह तो इतने सतर्क थे लेकिन यह साहिब बधाई देने पर ही भारी बहुत अधिक डराने की ख़बरें दे रहे हैं और फतवे दे रहे हैं। अगर उनके दिल में कुछ विचार थे तो उन्हें चाहिए था मुझे लिखते और अगर रोकना था तो यह समय ख़लीफा की ज़िम्मेदारी है कि रोके या जमाअत के निज़ाम के माध्यम से रोके। अल्लाह तआला हम सब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के उद्देश्य को समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

नमाज़ों के बाद कुछ जनाज़े भी पढ़ाऊंगा। दो जनाज़े हाज़िर हैं। आदरणीया महमूदा सादी साहिबा का जो आदरणीया मुस्लेह दीन साहिब सादी मरहूम की बीवी थीं। 22 मार्च को 94 साल की उम्र में उनकी वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मुस्लेह दीन सादी साहिब जिनकी वह बीवी थीं वह आदरणीय अब्दुल रहीम साहिब दर्द के भाई थे जो इमाम मस्जिद फ़ज़ल रहे हैं और उन्होंने यहां बड़ा काम किया है। सादी साहिब की वफात 1965 ई में हो गई थी। मरहूमा ने 41 साल का लंबा समय बेवा (विधवा) का बड़े धैर्य तथा शुक्र से बिताया। उनके एक बेटे हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस के ज़माने में वहाँ प्राइवेट सैक्रेटरी के रूप में भी काम करते रहे हैं। यह बेटे भी फौत हो चुके हैं। उनके एक बेटे जलालुद्दीन अकबर साहिब यहां हैं जो यू.के में उप सैक्रेटरी ज़ियाफत के रूप में सेवा करते रहे हैं। मरहूमा को ख़िलाफत से बड़ा संबंध और आस्था थी। तब्लीग़ का शौक, कुरआन पढ़ने और पढ़ाने का शौक,दुआ करने वाली और धैर्य करने वाली और शुक्र करने वाली थीं। पिछले छह साल से काफी बीमार थीं और बीमारी को भी बड़े धैर्य और शुक्र से गुज़ारा। मरहूमा मूसिया थीं। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्ल में हमेशा सच्चाई के साथ और ईमानदारी के साथ अहमदियत को कायम रखे।

दूसरा जनाज़ा नूरुद्दीन चिराग़ साहिब का है जो चिराग़ दीन साहिब मरहूम कादियान के बेटे थे। 15 मार्च को 45 साल की उम्र में उन्हें दिल का दौरा पड़ा और फौत हो गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनका संबंध भी कादियान से था। दस साल से अधिक समय से यू.के में रहते थे। तबीयत में बेहद सादगी थी और उनकी बहन लिखती हैं कि बचपन से उन्होंने ग़रीबी देखी थी इसलिए जब अल्लाह तआला ने उन्हें रोज़ी प्रदान की तो लालच पैदा नहीं हुआ बल्कि कई लोगों की आर्थिक मदद करते थे। उनकी एक डायरी मिली है जिस में 47 लोगों का उल्लेख है जिसे आप नियमित रूप से वित्तीय सहायता करते थे। एक ग़ैर अहमदी ने भी उनकी बड़ी प्रशंसा की है कि बड़ा सच्चे और फरिशतों के गुण रखने वाल थे। नमाज़ों के पाबन्द, ख़िलाफत से अत्यधिक सम्बन्ध रखने वाले,सिलसिला के बुज़ुर्गों का सम्मान

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 28 April 2016 Issue No. 8

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

करने वाले युवा थे। मरहूम की माँ और बाकी परिवार कादियान में है। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे और परिजनों को धैर्य और साहस प्रदान करे। विशेष रूप से उसकी माँ को अल्लाह तआला शांति दे।

एक जनाज़ा ग़ायब है जो सय्यदा मुबारका बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय अब्दुल बारी साहिब तअल्लुक दार बंगाली का है। यह 20 मार्च को 83 साल की उम्र में फौत हो गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। कुछ समय से बीमार थीं। यह बिहार में पैदा हुईं। उनके पिता सैयद मूसा रज़ा भागलपुर बिहार के थे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के समय उनके पिता ने 15 साल की उम्र में अहमदियत स्वीकार की। फिर उनकी शादी अब्दुल बारी तअल्लुक दार से हो गई। और पूर्वी पाकिस्तान चली गईं। भारत विभाजन के बाद ये लोग वहां चले गए। अब्दुल बारी साहिब ने भी 1946 ई में हज़रत मुस्लेह मौऊद के ज़माना में बैअत की थी। बांग्लादेश के गठन के बाद ये लोग फिर रबवा चले गए और 20 साल से अधिक समय तक उनके पति बारी साहिब ने, फज़्ल उम्र होम्योपैथिक डिस्पेंसरी में काम किया। जो तहरीक जदीद के अधीन चल रही थी। यहाँ आप के बेटे अब्दुल खालिक साहिब बंगाली भी हैं जो अपने क्षेत्र में काफी जाने जाते हैं। जमाअत में काफी सेवा करते हैं। अब्दुल बारी साहिब ने बच्चों को अपने उर्दू सिखाने के लिए अपनी बीवी के साथ रबवा भिजवा दिया था और वहां बांग्लादेश में (यह तब पूर्वी पाकिस्तान था) बड़ा अच्छा शानदार जीवन गुज़ार रही थीं और नौकर चाकर थे लेकिन बच्चों के लिए और तरबियत के लिए यह लोग रबवा आ गए और फिर यहीं रहे ताकि उर्दू सीखें और जमाअत का अधिक पता लगे और ख़लीफा के क़रीब रहें। इस लिहाज़ से उन्होंने बड़ी कुर्बानी दी। अल्लाह तआला उनके स्तर बढ़ाए और उन के बच्चों को इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए मदद प्रदान करे जिसके लिए उन्होंने कुरबानी दी और रबवा में आकर रहीं। यह तीन जनाज़े इंशा अल्लाह तआला जैसा कि मैंने कहा अभी नमाज़ों के बाद पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

उहदेदारों के चुनाव से संबंधित हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह की एक ताज़ा हिदायत

हज़रत ख़लीफतुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 12 जनवरी 2016 में फरमाया:

" हमें पहले से अधिक इस बात को समझने की ज़रूरत है कि हम ने कैसे अब्दुल्लाह बनने का हक देना है और अपनी ज़िद और अहंकार छोड़ना है और अल्लाह की ख़ुशी पाने की कोशिश करनी है। चुनाव के मौके पर भी ऐसे सवाल उठते रहते हैं अगर कई बार कुछ स्थितियों में जब बहुमत के ख़िलाफ फैसला दिया जाए तो इस प्रकार के सवाल लोग लिखते रहते हैं।

यह साल भी चुनाव का साल है। जमाअत की दृष्टि से इस साल चुनाव होने हैं। इस लिहाज़ से भी हर एक को अपने विचार को सही करने की ज़रूरत है कि दुआ के बाद हर रिश्ते को और हर रिश्ते को छोड़ कर अपना पक्ष जो है वह सही उपयोग करें, अपनी राय दें और फिर जो फैसला हो उसे स्वीकार कर लें। पूरी तरह से अपने व्यक्तिगत सोच से ऊपर होकर अपने फैसले करें।

ज़ैली तंजीमों में में भी ऐसे सवाल उठते रहते हैं। अभी दो दिन पहले ही एक देश में एक मज्लिस की लजना का चुनाव हुआ वहाँ से मुझे ख़त आ गया कि क्यों फलाँ को बनाया गया है, अमुक को क्यों नहीं बनाया गया। वह तो ऐसी है, वह वैसी है। तो इस प्रकार की बीहोदगियों हमें बचना चाहिए और जो भी बना दिया जाए इस समय के लिए जब तक वे बनाया गया बहरहाल इससे पूरा सहयोग करना चाहिए।" (ख़ुत्बा जुम्अ:12 जनवरी 2016 ई)

(अलफज़ल इंटरनेशनल 1 अप्रैल 2016 पृष्ठ 13)

☆ ☆ ☆

अमीरुल हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदुल्लाह बेनसस्त्रेहिल अज़ीज़ की ओर से

बेल्जियम में होने वाले हाल आतंकवाद की घटनाओं की निंदा और पीड़ितों के लिए दुआ

(प्रेस विज्ञप्ति) सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया के पांचवें ख़लीफा हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्ला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने ब्रसेल्स (बेल्जियम) में 22 मार्च 2016 को हुए आतंकवादी हमलों की कड़ी निंदा की है और इन हमलों के पीड़ितों से गहरी सहानुभूति करते हुए उनके लिए दुआ की है।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने अपने संदेश में कहा है कि सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया की ओर से ब्रसेल्स में आतंकवादियों की ओर से होने वाले बर्बर हमलों में बेल्जियम के लोगों से कहता हूँ कि दु:ख की इस घड़ी में गहराई से हम उनके साथ हैं और उन बर्बर और क्रूर हमलों की निंदा करते हैं।

हुज़ूर ने फरमाया कि किसी प्रकार की स्थिति में भी इस्लाम में आतंकवाद की ऐसी घटनाओं या निर्दोष लोगों को मारने की कदापि अनुमति नहीं है। दरअसल कुरआन फरमा चुका है कि " अकारण एक मासूम जान का कत्ल सारी मानवता का कत्ल के बराबर है। " हालांकि जिन्होंने इस्लाम के नाम पर यह क्रूर अपराध किया है उनके पास अपने इस काम का कोई भी औचित्य नहीं है। वह इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं और विश्व शांति को नष्ट करने के लिए प्रयासरत हैं।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह ने फरमाया कि हमारे दिल की गहराई से उठती हुई दुआएं उन पीड़ितों के लिए हैं जो इन हमलों का निशाना बने हैं या किसी भी तरह से प्रभावित हुए हैं। अल्लाह करे कि इस बुराई के अपराधियों को सज़ा देने के लिए जल्द न्याय के कठघरे में लाया जाए।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह का अंग्रेजी संदेश निम्नानुसार था:

"On Behalf of the Ahmadiyya Muslim Community worldwide, I express my Deepest Sympathies and Condolences to the Belgian people following the Barbaric Terrorist Attacks that have taken place in Brussels। Such Heinous and Utterly Inhumane Attacks must be Condemned in the Strongest possible terms।

Under no Circumstances does Islam permit Terrorism of any kind or the murder of innocent people। In fact, the Holy Quran has said that to kill even one innocent person is akin to killing all of mankind। Therefore, those who commit such Atrocities in the name of Islam can never find any Justification। They are Defaming Islam and Destroying the peace of the world।

Our Heartfelt Prayers are with the victims of these Attacks and all those who have been affected। May the Perpetrators of this evil act be Promptly Brought to justice। "

(फज़ल इंटरनेशनल 1 अप्रैल 2016 पृष्ठ 8)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad